मधुबन ओम् शान्ति अंक 297 अप्रैल 2017

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(08-03-17)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा प्रीत की रीति निभाने वाले, शमा के दिलपसन्द परवाने, सदा रूहानी गीत गाने और खुशियों में नाचने वाली विश्व कल्याण की सेवा पर उपस्थित निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने बहुत दिल व जान से 81 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर अपने प्यारे शिव भोलानाथ बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवायें की हैं, बहुत अच्छे-अच्छे समाचार सब तरफ से मिल रहे हैं। अभी तो होली का पावन त्योहार भी समीप है। होली का भी कितना सुन्दर अर्थ है। कहते हैं होली सो हो ली अर्थात् बीती सो बीती और होली अर्थात् बाबा के हो लिये। बाबा के बने तो होली (पावन) बन गये। तो जैसे होली पर सभी एक दो को रंग लगाते हैं ऐसे अपने श्रेष्ठ संग का रंग सबको लगाते, मिलन महफिल मनाते चलो। ऐसे सुन्दर यादगार पर्व की भी सबको बहुत-बहुत बधाई हो।

अब तो हम सबको सदा एवररेडी रह चारों ही सबजेक्ट में अच्छी मार्क्स लेनी हैं, इसके लिए सुबह से रात तक ईश्वरीय नियम और मर्यादाओं प्रमाण चलते रहना है। कोई भी बात की न आशा हो, न तृष्णा हो, बाबा जो सेवा करा रहा है, करते, कराते संगठन में बहुत-बहुत मीठा, न्यारा और प्यारा बनकर चलना है।

हमारी तपस्या में त्याग वृत्ति ऐसी हो जो कोई भी चीज़ में, कोई भी वस्तु या वैभव में, कोई भी आत्मा में या शरीर में अटैचमेन्ट न हो। 5 विकारों में भी इगो और अटैचमेन्ट दोनों को अच्छी तरह से छुट्टी देना है, इन्हें कभी यूज़ नहीं करना है। थोड़ा भी इगो नहीं, कोई व्यक्ति या वैभव में अटैचमेंट भी नहीं, तो हमारी यह दिल सच्ची रहेगी और दिमाग ठण्डा रहेगा। हमारी यह पढ़ाई ऐसी है जो झुटका, घुटका से मुक्त सदा एलर्ट रह सकते हैं, अलबेले नहीं। कहते हैं समय बड़ा बलवान है, तो इस समय का बहुत-बहुत कदर रखना है। एक मिनट, एक घड़ी भी व्यर्थ न जाये तो समय की बहुत वैल्यू है। सच्चाई, सफाई, सादगी में रहने से खर्चा और समय दोनों बच जाते हैं। अब कुछ भी मुझे हाथ में पकड़ करके नहीं रखना है, जो आता है वह सीधा यज्ञ सेवा में चला जाये। फिर यज्ञ की कोई भी सेवा जितनी करो उतना फायदा है। मैंने देखा है जैसा कर्म मैं करूंगी मुझे देख और भी करेंगे, तो मैं ऐसे कर्म करूँ जो मुझे देख औरों को भी प्रेरणा मिले। साथ-साथ हमारा योग बाबा से यथार्थ हो तो हमारी सेफ्टी है, सेफ्टी में सेवा है। बाबा मालिक है, हम बालक हैं। कोई भी बात सामने आये, बड़ी बात नहीं है, सोचो नहीं, सोचने से बात बड़ी हो जाती है, सेकेण्ड में समेट लो तो छोटी हो जाती है या समाने से जैसे कुछ हुआ ही नहीं। सचमुच मैं साक्षी होके देखती हूँ, कभी कोई चिंता नहीं की होगी क्योंकि मालिक बाबा बैठा है। काम बाबा का है, हम चिंता क्यों करें, हाँ सेवा में सेवाधारी हैं तो धारणा अच्छी रखनी है। धीरज और सच्चाई से सारी कारोबार अच्छी चल रही है। बोलो, आप सबका भी यही अनुभव है ना! बाकी इस समय मधुबन में सभी डबल विदेशी मुख्य टीचर्स तथा अनन्य भाई बहिनों की बहुत अच्छी रिट्रीट चल रही है। सभी **''सिम्पुल लाइफ''** पर बहुत गहरी रूहरिहान और योग तपस्या कर रहे हैं। अच्छा -

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"मालाओं से सजे हुए मालाधारी, विजय माला के मणके बनो"

1) माला आप बच्चों का विशेष यादगार है, बाबा ने हर एक के गले में चमकती हुई मालाओं का ओरीज्नल हार पहनाया है। इन मालाओं से सदा सजे हुए रहो, यह हार सदा पड़ा रहे तो माया भी हार खा लेगी। मालाओं को देखकर माया भाग जायेगी और आप विजयी बन जायेंगे।

2) सदा मालाधारी रहने के लिए अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि आत्मा रूपी मणी को ही देखेंगे, इसके सिवाए और कुछ भी नहीं देखेंगे, इससे ही माला के मणके बन करके सारे सृष्टि के बीच चमकेंगे, जब खुद मणी बनेंगे तब चमकेंगे। जो बहुत समय से विजयी बनकर रहते हैं वही विजय माला के मणके बनते हैं।

3) माला में नजदीक आना है तो फ्लोलेस बनो, इसके लिए ब्रह्मा बाप ने जो इतने वर्ष साकार रूप में कर्म किये हैं, उसे फालो करो। कोई भी कर्म करने के पहले जज करो कि यह कर्म हम कर सकते हैं! अगर नहीं कर सकते तो ब्रेक दे दो। फालो फादर याद आने से कभी फेल नहीं होंगे, फ्लोलेस बन जायेंगे।

4) जैसे बापदादा बच्चों को अपने से भी आगे रखते हैं, वैसे विजयी रत्न भी सभी को अपने संग का रंग लगायेंगे। उनके सामने जो भी आयेगा वह विजयी बन जायेगा। अभी यह सर्विस रही हुई है। ऐसे नहीं कि कोटों में कोई ही विजयी बनेंगे, लेकिन जो जैसा होता है वैसा ही बनाता है। ऐसे विजयी रत्न जो अनेकों को विजयी बना सकें वही माला के मुख्य मणके हैं।

5) जैसे दिव्य गुणों की माला हर एक ने नम्बरवार पहनी हुई है, वैसे अनेक जगे हुए दीपकों की माला अपने गले में डालना है। जितनी यहाँ चैतन्य दीपकों की माला अपने गले में डालेंगे उतनी वहाँ प्रजा बनेगी। तो ऐसी माला से अपने आपका श्रृंगार करना है। चेक करो कि कितने दीपकों की माला अभी तक डाली है? गिनती कर सकते हो वा अनगिनत हैं?

6- साकार से स्नेह अर्थात् सारे सिजरे से स्नेह, साकार अकेला नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है। आप सब माला के मणके हो ना! माला में अकेला मणका नहीं होता है। माला में एक ही याद के सूत्र में, स्नेह में परिवार समाया हुआ है।

7) विजय माला के जो 108 मणके हैं, उसमें नम्बर वन मणका और एक सौ आठवाँ मणका दोनों को सम्पूर्ण कहेंगे या नहीं? विजयी रत्न कहेंगे? विजयी रत्न अर्थात् अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त होने वाले। उनके लिए सारे ड्रामा के अन्दर वही सम्पूर्णता की फर्स्ट स्टेज है। तो हरेक अपने-अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त होकर माला में पिरो जायेंगे।

8) अभी बापदादा और दैवी परिवार के स्नेह के सूत्र में मणका बनकर पिरोना है। स्नेह के सूत्र में पिरोया हुआ मैं मणका हूँ, यह नशा रहना चाहिए। माला के मणकों को बहुत शुद्धि से रखा जाता है। उठाते भी बहुत शुद्धि पूर्वक हैं। तो हम भी ऐसा अमूल्य मणका हैं, यही समझना है।

9) जैसे धर्म-स्थापक यहाँ से संदेश लेकर, संस्कार भरकर जायेंगे वही संस्कार फिर इमर्ज होंगे। वैसे आप सभी के जो अपने-अपने भक्त और प्रजा है वह भी संस्कार लेकर जायेगी। अभी अगर भक्तों के सामने स्पष्ट मूर्त नहीं दिखायेंगे तो उनमें वह संस्कार कैसे भरेंगे? तो सिर्फ प्रजा नहीं बनानी है, साथ-साथ भक्तों में भी वह संस्कार भरने हैं। अभी भक्तों की माला और प्रजा की माला दोनों प्रत्यक्ष होंगे। हरेक को अपनी दोनों मालाओं का साक्षात्कार होगा।

10) अभी आप सब उम्मींदों के सितारे हो फिर बनेंगे सफलता के सितारे। सफलता आप के गले की माला है। संगम पर यही विशेष श्रृंगार है, सफलता की माला यथायोग्य, यथा शक्ति हर एक के गले में पड़ी हुई है। बापदादा को ऐसे श्रृंगारे हुए बच्चे अच्छे लगते हैं।

11) माला के मणकों की विशेषता यही है जो एकमत होकर एक ही धागे में पिरोये जाते हैं। एक की ही लगन, एकरस स्थिति और एकमत तो सब एक ही एक। एक जैसे मणके हैं तो एक धागे में पिरोये जाते हैं। तो एक ही मत पर चलने वाले और आपस में भी एकमत हो, संकल्प भी एक जैसे हों। एकमत के लिए भिन्नता को समाओ। समाने की शक्ति से एकमत का वातावरण बनेगा और आपस की एकता से ही समीप आयेंगे, फिर माला सज़ जायेगी।

12) सदैव यह स्मृति रखना कि मैं विजयी माला का विजयी रत्न हूँ। इस स्मृति में रहने से कभी हार नहीं होगी। इसके लिए सम्पूर्ण बलि चढ़ना है। ऐसे महाबली के आगे माया का कोई भी बल चल नहीं सकता। बापदादा ऐसे विजयी रत्नों के गले में अलौकिक स्नेह की माला पहनाते हैं।

13) जो बच्चे शुरू से लेकर मन्सा, वाचा, कर्मणा में आई हुई समस्याओं या विघ्नों के ऊपर विजयी बने हैं, उसी अनुसार

उनकी विजय माला बनी है। शुरू से लेकर देखो तो मालूम पड़ सकता है कि मेरी विजय माला कितनी बड़ी है! यह जो चतुर्भुज में विजय माला की निशानी है सिर्फ एक की नहीं, यह विजयी रत्नों की निशानी है। जो अभी जितना विजय माला पहनने के अधिकारी बनेंगे, उसी प्रमाण उतना ही भविष्य में ताज, तख्त प्राप्त होगा।

14) कोई भी कर्म करने के पहले निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हैं। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हैं, तो अब वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है, इसलिए कहा जाता है – बना बनाया....।

15) एक दो के समीप आते-आते समान होते जाते हैं, तो जैसे यह दो (दीदी-दादी) एक दिखाई देते हैं, वैसे यह सब एक दिखाई दें तब कहेंगे अब माला तैयार है। स्नेह का धागा तैयार हो गया तो मणके सहज पिरो जायेंगे। स्नेह के धागे में मोती अति समीप होते हैं तब ही माला बनती है। समीपता ही माला बनाती है। तो स्नेह का धागा तैयार हुआ लेकिन अभी मणकों को एक-दो के समीप आने के लिए मन की भावना और स्वभाव मिलाना है तब माला प्रत्यक्ष दिखाई देगी।

16) जैसे निरन्तर याद में रहना है वैसे निरन्तर विजयी बनो। इसके लिए चेक करो कि आज सारे दिन में संकल्प, वचन, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क, स्नेह, सहयोग और सेवा में विजयी कहाँ तक बने? अगर बहुत समय से सदा के विजयी, हर कदम के विजयी, हर संकल्प के विजयी रहेंगे तो विजय माला में समीप के मणके बन सकेंगे।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 02-01-14 *मधुबन*

"हम भगवान के बच्चे सर्व आत्माओं के पूर्वज हैं, हमारे चेहरों में साधारणता ना हो"

(दादी जानकी)

आज तीन बारी ओम् शान्ति का भिन्न विचार आ रहा है, विचार माना अनुभव हो रहा है। एक सेकेण्ड में त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक यह भान आता है। जैसे बाबा ने कहा जब कोई नॉलेज पढ़ते हैं तो समझते हैं फलाना बनूँगा और हम अभी अनुभव कर रहे हैं, पढ़ते-पढ़ते याद में बैठे हैं, कुछ काम तो कर रहे हैं ना। याद में क्या है? त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी... यह भान देह के भान से स्वत: ही परे कर देता है। मेहनत नहीं करनी पड़ती है। संगमयुग पर बाबा मिला सबकुछ मिला, कोई इच्छा नहीं, ममता नहीं। बाबा से जो मिला है वह स्वप्न में, संकल्प में है सबको मिले, यह भावना काम कर रही है। वृत्ति, वायब्रेशन और वायुमण्डल से बहुत अच्छी सेवा हो रही है। सहज योग, सहज सेवा और इतना बड़ा परिवार है तो स्नेह और सकाश भी काम कर रहा है।

ईश्वरीय अलौकिक परिवार में हम खुश, आप खुश, बाबा भी खुश। बाबा ने कहा वाह बच्चे वाह! वाह, वाह, वाह बहुत बारी बोला। बाबा को इतने प्यारे बच्चे लगते हैं, बाबा का प्यार है और भगवान कहे वाह बच्चे वाह! तो हम सब मिल करके वाह बाबा वाह! कहेंगे। भगवान के बच्चे हैं। भगवान मेरा साथी है, सेवा मेरा भाग्य है, सिम्पल है। ज्ञान बहुत सहज, सिम्पल, अच्छा, रमणीक है। कभी हंसने बहलने के लिए रमणीक बातें भी चाहिए। वैसे अन्दर इसी मनन चिंतन में रहते समय को सफल कर रहे हैं। सतयुग में हम कैसे होंगे, वह कोई बड़ी बात नहीं है, अभी कैसे हैं? फिर लगता है बाबा कहते हैं हम भगवान के बच्चे हैं, पर विश्व की सर्व आत्माओं के लिए हम पूर्वज हैं। पूर्वज कुछ भी बोलते नहीं हैं। पूर्वजों के चेहरे में साधारणता नहीं होती है। पूर्वज की स्थिति बनाके रखना किसका काम है?

जब मेरा परिचय देते हैं ना स्टेबल माइन्ड इन दी वर्ल्ड, उसे तो 20 साल हो गया, उसके बाद समझो माइन्ड कैसा होगा! वो दिन कहाँ, अभी के दिन कहाँ? यह कमाल किसकी है? साइंसदानों को ऐसा देखने का, जानने का माइन्ड कभी ऐसा हो सकता है क्या? मैं वो सीन कभी सामने देखती हूँ ना, तो सभी वायरे हो रहे थे। मुझे कहा 100 से साल साल कम करते जाओ, एक्यूरेट हो गया।

ऊंचे ते ऊंचा बाबा है, बाबा ने क्या से क्या बनाया है, वो दिन और आज के दिन बाबा की बहुत सेवायें हुई हैं। बाकी यह सेवा दुनिया में हरेक आत्मा को पता चले, मेरा बाबा कौन है? परमेश्वर, वो मुझे अपना बच्चा समझे, मैं उसको अपना बाप समझूँ। न सिर्फ बाप, पर पाँचों सम्बन्धों की शक्ति अलग-अलग है माँ, बाप, शिक्षक, सखा, सतगुरू। हरेक सम्बन्ध में

अपनी शक्ति है। एक भी सम्बन्ध मिस नहीं है, मिक्स है तो समथिंग मीसिंग होगा।

पदमापदम भाग्यशाली वह है जो बाप को फॉलो करे और हम सब मिल करके फादर को फॉलो कर रहे हैं। एक बाप को हम सब बच्चे मिल करके फॉलो कर रहे हैं। बाबा राह बताने के लिये राय देता है, उस पर चलना है। जैसे बाबा कहते हैं जी बाबा कहने में बहुत मजा है। बाबा के हरेक शब्दों का अर्थ सहित फायदा लेने में मजा आता है।

बाबा कहते कोई बात समझ में नहीं आती है तो बाबा से पूछो, नहीं तो महारथियों से पूछो। तो मेरे कमरे में पूर्वजों का फोटो रखा है, घड़ी-घड़ी देखती हूँ हरेक ने जी बाबा, मेरा बाबा कहा है, जैसा बाबा ने कहा वैसा ही किया है। सभी पूर्वज़ आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार रहे हैं। कभी पूर्वजों का फोटो उनके परिचय के साथ डालना चाहिए ताकि पता चले यह कौन थे? अन्दर से उनकी शक्ति काम कर रही है। उन्होंने परमात्मा से जो शक्ति पाई है, जिससे अपना भविष्य बनाया है, वह सेवा अब भी कर रहे हैं, तब तो इतनी वृद्धि हो रही है। हमारा झाड़ बहुत बढ़ता जा रहा है। इस झाड़ में हरेक पत्ता पत्ता भी शोभनिक है। भक्ति में कहते हैं पत्ते पत्ते को भगवान हिलाता है, प्रैक्टिकली भगवान ने जो बच्चे पैदा किये हैं ना, यह गुलदस्ता देते हैं सब फूल एक जैसे नहीं हैं, थोड़ा तो कुछ फर्क है, पर संगठन में इक्ट्ठे हैं तो अच्छा लगता है। कोई यहाँ होते भी क्लास में नहीं होंगे, कोई बाहर की सेवा में होते हुए भी जब यहाँ होंगे तो क्लास में जरुर होंगे, उसका बल है। क्लास में हाज़िर होने का बल अलग है, सेवा का बल अलग है। यह है पर्सनल पुरुषार्थ की बात, तो वह मिस नहीं करने का बल अलग है। सेवा के बहाने... पर्सनल पुरुषार्थ जो है वो मिस न हो, यह बाबा ने सिखाया है, वह पूर्वजों ने फॉलो किया है तब तो देखो उनका चेहरा चमक रहा है। साकार बाबा से यह स्पष्ट अनुभव होता था, साकार में निराकार... तो साकार बाबा शरीर में होते हुए भी निराकारी, निरंहकारी बना है निर्विकारी बनने से। निराकारी स्थिति ऐसे नहीं बन सकती है। तो जब तक निर्विकारी नहीं बने हैं, तो हरेक देखे एक सेकेण्ड निराकारी... निरहंकारी... निर्विकारी... कहाँ तक बने हैं? यह रहस्य युक्त बड़ा अच्छा अतीन्द्रिय सुख तो क्या, फरिश्ता रूप की स्थिति में अनुभव कराता है। तो अनुभवी ही जाने इस सुख को। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"सच्चा सोना, बेदाग हीरा बनना है तो अन्दर जरा भी किचड़ा ना हो, सच्ची दिल हो"

क्लास में यहाँ आने के पहले मीठे बाबा को थैंक्स दिया, बुद्धि को ठीक रखा है क्योंकि बुद्धियोग लगाना है, बुद्धि में ज्ञान की धारणा करनी है। सेवा ड्रामा अनुसार प्यार से करनी है लेकिन बुद्धि हर सेकेण्ड, हर मिनट आत्म अभिमानी स्थिति में रहकर बाबा से शान्त रहने की शक्ति लेती रहे।

सच्चाई की गहराई में जाओ तो कोई भी किचड़ा दिल में न आये। दिल में होगा तो बुद्धि फिर उस पर चलेगी। तो सच्चा सोना, बेदागी हीरा बनना है तो वैल्यु है। जरा भी अगर थोड़ा दाग अन्दर रह गया तो हीरे का दाग तो नहीं मिटा सकते हैं, पर हम परमात्मा के बच्चे कोई भी पुराना दाग है, सच्ची दिल बनाने के लिए मिटा सकते हैं। मुझे सिर्फ अन्दर से यह हो कि मेरा बाप सत्य है, ज्ञान सत्य है, सतयुग आने वाला है।

पाँचों सम्बन्धों में माता, पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरू कोई कमी नहीं है। लौकिक में तो पाँचों अलग-अलग होते हैं वो भी समय अनुसार... पर यहाँ हर समय जन्मते ही पाँचों सम्बन्ध एक से हैं, यह वण्डर है, सोचो तो सही। भले हम कृष्ण को मानते थे, प्यार था पर ऐसे सम्बन्ध नहीं थे। अभी यह जो भगवान ने समझ दी है, माँ है, बाप है तो ऐसा सपूत लायक बनना है, शिक्षक है तो सच्चा स्टूडेन्ट बनना है, सतगुरू है तो उसकी श्रीमत पर चलना है, सखा है तो साथी बनाओ। भगवान ने इतनी वण्डरफुल पहचान दी है जो कभी भूल से हम और कुछ सोच करके अपना समय न गँवायें। जिस घड़ी कोई भी बात सोच में है, तो बोलने चलने का आवाज़ ही चेंज हो जाता है क्योंकि अन्दर में सोच कुछ और है, सोच-विचार को बुद्धि से साक्षी होके देखो, कैसा है? मुझे बहुत अच्छा लगता है, सोचने की जरुरत नहीं है क्योंकि कराने वाला बाबा है, ड्रामा बना पड़ा है, तो मुझे क्या और क्यों सोचना है? इसलिए मुझे तो सिर्फ सच्चा रहना है।

जैसे वो गीत है बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है, वैसे यहाँ क्लास में हाज़िर होने में भी सुख मिलता इलाही है। मुझे तो होता है इसलिए खांसी की परवाह न करते हुए भी कभी मिस नहीं करना चाहती हूँ। मैं तो अमृतवेला भी हाज़िर होना चाहती हूँ, पर ड्रामा अनुसार इस शरीर को चलाने के लिए... फिर भी योग कभी मिस नहीं किया है। यह गुरु कृपा

कहें, सच्चाई की शक्ति कहें क्योंकि यह समय फिर नहीं मिलेगा। समय की कीमत बहुत है, एक सेकेण्ड, एक मिनट, एक घण्टा जो भी पास्ट हुआ वो अपना परिवर्तन करने में बिताना है। कभी भी अपने में वा किसी में नाउम्मींद नहीं होना है, भावना अच्छी रखने से परिवर्तन सम्भव है क्योंकि ज्ञान योग में पूरा ध्यान न होने के कारण भाव-स्वभाव के वश हो करके खुद भी डिस्टर्ब होते हैं औरों को भी डिस्टर्ब करते हैं। अपना दोष नहीं निकालते हैं, दूसरे के दोष इकट्ठा करके कम्पलेन करते हैं, तो यह कितनी बड़ी भूल है! ऐसी छोटी-छोटी भूलें अगर इकट्ठी होती जायेंगी तो समय चला जायेगा, फिर क्या हाल होगा?

मीठे बाबा ने हमारे दिल में कितना अपना यादगार बना दिया है, हमारे अव्यक्त बाबा ने गुल्जार दादी को निमित्त बना करके कितनी पालना की है, कितना शुक्रिया बाबा का मानें। अन्दर दिल में बहुत रिस्पेक्ट है, रिगार्ड है। तो मुझे क्या करना है? वही सोचो, वही करो तो बहुत फायदा है। चलने के लिए राय मिली है, कहाँ चलना है, कैसे चलना है? फिर इतना जो सुना है, बुद्धि से पूछो वैसे कर्म किया है? अगर अन्दर एक बाहर दूसरा, कामचलाऊ चल रहे हैं। अन्दर जो सच्चाई होना चाहिए, भावना से चलना चाहिए, वो लक्ष्य नहीं है। अन्दर इतना सच्चा हो जो किसी को लगे यह जो कहता है ना, सच कहता है, इतनी सच्चाई हो। ओम् शान्ति।

तीसरा क्लास

"बाबा से मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा लेना है तो हद और बेहद के अन्तर को जानो"

मैं कौन हूँ? इस सीट पर सेट रहने की श्रीमत बाबा ने दी है। सीट पर सिर्फ बैठना है लेकिन हिलना भी नहीं है। क्यों, क्या शोभता नहीं है। क्यों, क्या, कौन बोलेगा? ज्ञान कहता है संकल्पों की क्वालिटी को ऊंचा बनाओ। श्रेष्ठ संकल्पों से अच्छी सिद्धि मिल जाती है, बहुत फायदे हैं। मुरली पर मनन करने से चिंतन भी अच्छा चलता है। कहते हैं मुझे अपने चिंतन में ले लो राम, हमारे चिंतन में एक बाबा ही हो। गीता का भी यही सार है कि पहले देह से न्यारा बनो और अन्तिम अध्याय है अन्तिम स्थिति है - नष्टोमोहा। कहाँ देह के सम्बन्धों मे फंसे हुए हैं, मेरी माँ, मेरा बाप, मेरा मेरा मेरा... अभी मैं देह से न्यारा हूँ, यह सिम्पल है, किसी प्रकार से भी कोई देहधारी की कभी भी याद की खींच न हो। अभी सभी अपने को एक अकेला समझते हैं, दूसरा खाली समझते हैं। मैं बीमार हूँ, कैसे रहूँ.. यह ख्याल किया तो मेरी हालत क्या होगी! उम्र बड़ी हो गई है, मुझे कोई पूछने वाला नहीं है, यह ख्यालात ज्ञानी योगी के नहीं हैं। अन्दर संकल्प में बाबा मेरा साथी है, बाबा ने सबकुछ दिया है, कोई कमी नहीं है। वण्डर है यह, कभी भी कोई प्रकार की कमी महसूस नहीं हुई है।

पहले तो बाबा को सिर्फ इण्डिया में पहचानते थे, अभी सारे विश्व में बाबा ने बच्चों को, बच्चों ने बाबा को प्रत्यक्ष किया है। सारी विश्व में कोई कोना नहीं रहा है, सभी अच्छी तरह से बाबा बाबा बाबा कर रहे हैं, कमाल है बाबा आपकी। सारे विश्व को अपने हाथों में ले लिया है। यह दृश्य बहुत सुन्दर है, इतना सुन्दर दृश्य देख, मेरा बाबा विश्व कल्याणकारी तो मैं कौन हूँ? बाबा कहता है तुम भी बच्ची अगर विश्व कल्याणकारी बनेगी, तो हद की बातों से पार चली जायेंगी। कोई बात हद की नहीं। हद में बुद्धि है तो क्या हाल-चाल है? बेहद में बुद्धि है तो क्या हाल-चाल है? कहाँ रहते हैं? देखो।

तो हद बेहद का अन्तर जानना माना बाबा से मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा लेना। सभी इच्छाओं से मुक्त और जीवनमुक्त। जीवन में हैं मुक्त हैं, जैसे वर्से में मिला है। यह जो लेन-देन कर रहे हैं, रूहरिहान कर रहे हैं, चिटचैट कर रहे हैं, कितना मजा आता है! हम कितने खुशनसीब हैं! खुशी कैसी है? मधुबन आके अच्छा लगता है ना, कोई बात नहीं है तो खुशी होती है। बस। खुश रहो आबाद रहो, न विसरो न याद करो। पुरानी बात याद नहीं करो। ऐसी अच्छी-अच्छी सिम्पल बातें मन में हैं, चित्त में हैं, मुख में हैं, चलन में हैं, चेहरे में हैं। अभी हमको और कोई संकल्प नहीं है, हे आत्मा जैसे बाबा ने तुमको अंगुली पर नचाया है, सारी लाइफ को सामने रखो। मैंने भी स्वयं भगवान को अंगुली पर नचाया है। वो कौन है, कैसा है, क्या करता है, कैसे कराता है.., वह देखो, आ करके अनुभव करो। यह रचना देखो कितनी सुन्दर

है और बाबा मेरा कितना मीठा है, सारा खा जाऊं... ऐसा अन्दर आता है।

कभी कोई कुछ कडुवा हुआ तो युक्ति से मीठा बना दो, कडुवा हो गया... ऐसे आवाज़ नहीं करो। सारी दुनिया इस समय कडुवी है, कडुवे को मीठा बनाना, यह बाबा का ही काम है। स्वीट बाप सारी दुनिया को स्वीट बनाने आये हैं। मैं नहीं समझती हूँ कभी किसी ने हमारे से कडुवा बोला होगा, नहीं। इसमें हमें फिर दीदी बहुत याद आती है क्योंकि बहुत सिखाया है। दिल्ली में कुछ सेवा किये बगैर नाश्ता करने नहीं देती थी। जाओ कहाँ न कहाँ सेवा करके आओ। बड़ों की आज्ञा मानी माथे और सेवा करना भी मुझे अच्छा लगता था। बाम्बे में भी समुद्र किनारे बैठ जाती थी, ज्ञान सुनाना बहुत अच्छा लगता था। सेवा भी जो मिले उसमें हाज़िर हों। यह भी एक गिफ्ट थी, लण्डन में पहले खाना हम खुद बनाती थी, खाना बनाकर फिर सफाई भी कर देती थी। ऐसे नहीं खाना बनाके फैला दूँ, फिर सफाई के लिये अलग, इतना ही नहीं खाना बनाते कोई स्टूडेन्ट आया, तो गैस बन्द करके जाके बैठ जाती थी। यह नहीं कि मैं खाना बना रही हूँ, आजकल सुनने को मिलता है कहेंगे, अभी मैं बिजी हूँ या कहेंगे मैं यह कर रही हूँ। कभी बिजी शब्द कहना भी अच्छा नहीं है, शोभा नहीं है। अच्छा - ओम् शान्ति।

"साधनों के साथ ज्ञान योग की पालना को स्मृति में रख खुशी में सदा झूमते रहो" (गुल्जार दादी जी)

हम सभी एक दूसरे को देख खुश होते हैं, क्यों? क्योंकि हमको बाबा ने सारे विश्व में से चाहे इण्डिया हो या कोई भी स्थान, सब जगह से चुनकर सिकीलधा बनाया है। कितना सुन्दर हॉल बनाकर दिया है, जिसमें मेरे बच्चे बैठे, उन्हें जरा भी दु:ख न हो। इतना ख्याल रखता है बाबा बच्चों का। बाबा को सभी बच्चों से विशेष प्यार है। बच्चों को देखकर बाबा को बहुत अच्छा लगता है कि इन्होंने हिम्मत से खुद को बनाया है। बाबा का बच्चों की एक एक चीज़ पर अटेन्शन जाता है। हमने साकार बाबा को देखा, बच्चों की खुशी के लिए अपनी जान देने को भी तैयार रहता था, बस मेरे बच्चों को दु:ख न हो। एक एक बच्चे से बाबा को बहुत प्यार है। हम सभी भी बाबा के प्यार के हकदार हैं। जितना बाबा का प्यार स्वीकार करते रहेंगे उतना ही अपने को भाग्यवान समझेंगे। अगर कोई बीमार भी होता था तो बाबा कहता था बच्चे की बीमारी मुझे लग जाये, बच्चे को नहीं। क्या हमें भी बाबा से इतना प्यार है। प्यार में तो क्या नहीं कुर्बान किया जा सकता। स्थूल वस्तु नहीं, सूक्ष्म संस्कारों को बाबा पर कुर्बान करना, क्या बड़ी बात है। बाबा हमारा कितना ध्यान रखते हैं, यह देख बहुत खुशी होती है। दिल से निकलता है वाह बाबा वाह! बाबा ने बच्चों के लिए कितने सुख के साधन बनाये हैं। सुबह से लेकर रात तक जो भी दिनचर्या बीतती है उसमें कितने अथाह सुख के साधन हैं। हम जब यहाँ आते हैं तो आपका जीवन देख हमें भी हमारा बचपन याद आ जाता है। बाबा ने हमें भी बहुत सुख के साधन दिये थे। फिर सेवा में लग गये, सेवा में तो अपने अपने ढंग के स्थान होते हैं लेकिन जब तक साकार बाबा के साथ थे तो बहुत सुख के साधन मिले, जैसे अभी आपको मिले हैं। आपके भाग्य को देख खुशी होती है - वाह मेरे भाई बहनें वाह! बाबा ने प्यार से आपके लिए यह स्थान बनवाया है। भले दूसरों के सहयोग से बना है लेकिन बनवाने वाला कौन? बाबा। कदम-कदम पर वाह बाबा वाह का अनुभव करते रहो। वैसे तो साधन सेन्टर्स पर भी होते हैं पर यहाँ संगठन में हर प्रकार के साधन होना कम बात नहीं। आपको जो यहाँ साधनों के साथ ज्ञान और योग की पालना मिल रही है, उसको स्मृति में रख खुशी में झूमना चाहिए। जैसी बाबा अभी आपकी पालना कर रहा है, ऐसी पालना सतयुग में राजकुमार और राजकुमारियों की भी नहीं होती। इतना नशा है? आप जैसे भाग्यवान और कहीं नहीं हैं क्योंकि सिकीलधे हो ना। एक एक को बाबा ने चुनकर इकट्ठा किया है, किसी को ईस्ट से और किसी को वेस्ट से, अभी सभी मिलकर एक हो गए हैं।

हमें तो बाबा ने छोटेपन में इतनी अच्छी पालना दी लेकिन आपको तो बड़ों को इतनी अच्छी पालना मिल रही है। बाबा ने आपको तन, मन और धन तीनों सुख के साधन दिये हैं। संसार में जो रॉयल लोग होते हैं उन्हें सिर्फ तन का सुख होगा, मन का नहीं। हमें तो सारे सुख हैं। चेक करो कि हम सदा

खुशी में रहते हैं? क्योंकि संगठन में बातें तो आयेंगी, हमें भी अनुभव है। संगठन में एक दो के गुण देख उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते जाओ, बातों में नहीं जाओ। संगठन का भी फायदा उठाओ। देखो, आज संगठन में कितनी रॉयल रीति से बैठे हो, सतयुग भी इसके आगे कुछ नहीं। जो अन्तर का सुख यहाँ है, वह सतयुग में भी नहीं होगा। बाहर कुछ भी होता रहे लेकिन बाबा हमें हर हाल में खुश रखता है। ऐसा बाबा फिर कल्प के बाद ही मिलेगा। बाबा ने हमें सैलवेशन के साथ जो दिल की खुशी दी है वह कहीं नहीं मिलती। आपकी जीवन साधारण नहीं, भले भाव-स्वभाव का टकराव तो संगठन में होता ही है लेकिन बाबा का प्यार सब भुला देता है। ज्ञान ताकत देता है। सदा दिल से यही निकलता रहे वाह मेरा बाबा वाह! दुनिया में क्या लगा पड़ा है और बाबा ने हमारा भाग्य कितना श्रेष्ठ बना दिया। खुशी होती है ना? यहाँ खुशी के बिना और ही क्या, अगर थोड़ा बहुत कुछ होता भी है, वह हिसाब-कितना संगठन में चुक्तू हो रहा है। बाबा हमें रोज़ खुशी का खज़ाना देता है, कमाल है बाबा की। धार्मिक स्थानों पर दूसरी बात होती है लेकिन यहाँ परिवार और स्कूल दोनों हैं। जब क्लास में होते हैं तो स्कूल लगता है और जब एक साथ खाते पीते हैं तो घर लगता है। यहाँ दोनों भासना आती हैं। भगवान सहज बाप के रूप में मिल जायेगा, कम बात नहीं है। वह हमें ऐसे मिला है जैसे हमारा ही था। बाबा ने हमें इतने बड़े संगठन में चलने की शिक्षा दी है। संगठन में थोड़ा बहुत चलता है लेकिन संगठन अच्छा है। यहाँ जितना ज्ञान योग और धारणाओं पर ध्यान खिंचवाया जाता है और कहीं शायद इतना नहीं होता। सदा खुशनुमः रहना है, बातों से नहीं डरना। संगठन में बातें तो आयेंगी लेकिन हमारा ध्यान बाबा और पढ़ाई पर हो तो यह बातें कुछ भी नहीं लगेंगी। संस्कारों के मिलन में ऐसा होता है। हमने तो बाबा से छोटेपन में आप जैसी पालना पाई है लेकिन आप तो बड़े ऐसी पालना के पात्र हो।

प्रश्नः- दादी जी, हमारे ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन पढ़ाई है सदा पढ़ाई पर हमारा ध्यान रहे इसके लिए क्या करें?
उत्तरः- जो हमारे चारों सब्जेक्ट हैं उन पर विशेष ध्यान रहे। जब हम शुरू-शुरू में बाबा का बनते हैं तो बाबा और पढ़ाई पर बहुत ध्यान रहता है, बहुत उमंग-उत्साह रहता है लेकिन धीरे-धीरे माया अपना रूप दिखाती है। पहले नशे में रहते हैं और पेपर के टाइम सोचते हैं क्या होगा, कैसे होगा। अगर हम बाबा की बनाई हुई दिनचर्या पर ध्यान दें तो सब ठीक हो जाता है। अगर हमारी दिनचर्या ठीक है तो हमारे जैसी खुशी और किसी को नहीं होगी। सुबह-सुबह मुरली सुनकर सारा दिन उसका अनुभव करें। मुरली और योग मिस नहीं करो। क्लास में सिर्फ प्रेजेन्ट के लिए नहीं बैठना लेकिन मन से भी प्रेजेन्ट रहना है। संग से अपनी सम्भाल करनी है। हमें भगवान मिला है, यही नशा और खुशी हो।

प्रश्नः- दादी जी, पर-चिन्तन से मुक्त कैसे बनें?
उत्तरः- जब भी समय मिले बीच-बीच में मुरली का मंथन करो। परचिंतन से कोई भी फायदा नहीं और प्राप्ति भी नहीं। संगठन में परचिंतन चल सकता है लेकिन चलना नहीं चाहिए। पढ़ाई पर ध्यान देंगे तो सेफ रहेंगे। सारा दिन सेवा तो करते हैं लेकिन अपनी रीति अपनी प्रोग्रेस के लिए मन और बुद्धि का टाइमटेबल बनाओ। रोज़ सवेरे सोचो आज मुझे नया क्या करना है। आज कर्म और बोल में क्या नवीनता होगी! मन की दिनचर्या स्वयं बनाओ इसमें हल्के नहीं बनो। अपनी उन्नति के लिए मन का प्रोग्राम बनाओ। अपनी कमजोरी को जान अपने मन की दिनचर्या बनाओ। मन किसी भी बात में फेल न हो, सब बात में विजयी हो।

प्रश्नः- दादी जी, चलते-चलते ईर्ष्या और रीस उत्पन्न हो जाती है, क्या यह ठीक है?
उत्तरः- संगठन में ईर्ष्या और रीस होगी लेकिन इससे कोई फायदा नहीं और ही नुकसान है। ईर्ष्या की आदत पड़ गई तो निकलने में समय लगता है। हमारी नज़र बहनों पर नहीं मम्मा बाबा पर जाये। बहनों को देखेंगे तो कमी नज़र आयेगी। हमें संगठन मिला है एक दो के उमंग से आगे बढ़ने के लिए ईर्ष्या करने के लिए नहीं। अपने ऊपर ध्यान दो मुझे क्या करना है। कमजोरी वालों को नहीं देखो, उमंग वालों को देखो।

प्रश्नः- दादी जी, हिसाब-किताब बन रहा है या चुक्तू हो रहा है उसकी निशानी क्या होगी?
उत्तरः- अगर चुक्तू हो रहा है तो सन्तुष्टता और हल्कापन फील होगा, भारीपन नहीं लगेगा।

प्रश्नः- दादी जी, सेवा का लक्ष्य क्या है?
उत्तरः- सबको बाबा का परिचय देकर बाबा का बनाना, सिर्फ कनेक्शन में लाना नहीं। उनको बाबा का बनाकर उनकी पीठ करनी है, उमंग-उत्साह में लाना है, बीच में छोड़ नहीं देना है। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"सम्पन्न बनना है तो सबके प्रति सदा शुभ सोचो, शुभ भावना रखो, व्यर्थ को समाप्त करो"

आज प्यारे बापदादा के सभी हाइएस्ट, होलीएस्ट बच्चे बैठे हो। गीत में भी सुना कि बाबा कहता कि तुम्हें सितारों से पार जाना है। सितारों से पार है हमारा घर। घर में जाने से पहले आता है सूक्ष्मवतन, अव्यक्त वतन तो जब अव्यक्त वतन पास करें तब अपने घर मूलवतन में जावें। तो बाबा हमें रोज़ यह बुद्धि की ड्रिल कराते कि एक सेकेण्ड में इस साकारी दुनिया में आओ, एक सेकेण्ड में अव्यक्त वतन, सूक्ष्म वतन में जाओ। एक सेकेण्ड में अपने मूलवतन में जाओ। ऐसी रोज़ की हरेक प्रैक्टिस करो। सेकेण्ड में उडती कला का अनुभव करो। इसके लिए पहले तो अपनी बुद्धि इतनी हल्की हो जो किसी भी घड़ी इस देह से न्यारी बन जावे। बार-बार यह बात बाबा सुनाता है कि तुम अपने बुद्धि पर बोझ अनुभव नहीं करो। कार्य-व्यवहार करो परन्तु अपने को मैं करता हूँ या मेरा यह काम है, यह मैं और मेरे का बोझ अपने सिर पर नहीं रखो। जिम्मेवार बाबा है, हम निमित्त उनकी श्रीमत पर कदम बाय कदम चलते हैं, जिस कदम में हमारा पदम है।

तो आज आप सबसे विशेष रूहरिहान करने के लिये क्लास रखा है कि बाबा ने जो हमें सम्पन्नता की समीपता को लाने लिये विशेष श्रीमत दी है। और अटेन्शन देने के लिये, पुरुषार्थ में तीव्र गति लाने के लिये 6 मास का टाइम भी दिया है। तो देखा जाता कि समय रोज़ का रोज गुजरता जाता, मास तो ऐसे चला जाता जैसे एक सप्ताह बीता हो। कल पहली तारीख थी फिर देखो तो आज पहली तारीख है, ऐसे समय तीव्र गति से चलता है। तो हमें भी ऐसा ही तीव्रगति से बाबा के इशारों अनुसार पुरुषार्थ करना है। और पुरुषार्थ का लक्ष्य है सिर्फ स्वयं ही स्वयं अटेन्शन रखो। अटेन्शन है तो बुद्धि सहज अनुभव करेगी, अटेन्शन होगा तो सम्पन्नता तक पहुंचने में मेहनत या बोझ अनुभव नहीं होगा। इसके लिये बाबा ने हमें मुरलियों में सम्पन्न बनने के लिये जो समय प्रति समय इशारे दिये हैं, उन्हें याद रखो तो दिन भर उस पर मनन चलेगा।

सबसे पहले हर एक अपने आपसे पूछो कि स्वयं में फेथ है कि मैं पुरुषार्थ कर लास्ट सो फास्ट आऊंगा! मैं ही सम्पन्न बना था और बनूंगा। मेरे संस्कार कहो अथवा पुराने कोई भी बन्धन हैं, मैं उन सब संस्कारों को, बन्धनों को पुरुषार्थ कर परिवर्तन कर सकता हूँ? इसके लिये पहले स्वयं पर स्वयं का फेथ चाहिए। इसके लिये सूक्ष्म में भी अगर संकल्प हो कि यह स्थिति तो मेरे लिये बड़ी मुश्किल लगती, तो हम कहेंगे आज आप हरेक इस सूक्ष्म कमजोरी के संकल्प को बाबा के सामने दान कर दो। जबकि बाबा कहता है तुम बच्चों से मेरा वायदा है कि तुम एक कदम आगे बढ़ो तो मैं दस कदम क्या, 100 कदम आगे आऊंगा। "हिम्मते बच्चे मददे बाबा।" तुम निश्चयबुद्धि बनो तो विजय अवश्य समाई हुई है। तो सबसे पहला चाहिए स्वयं ही स्वयं पर सम्पूर्ण फेथ। फुल फेथ रखो तो बाबा की मदद आटोमेटिक मिलेगी। यह भी एक बहुत बड़ा वरदान मिल जाता। तो पहले स्वयं पर फेथ हो फिर बाबा के ऊपर फेथ हो।

साथ-साथ यह भी फेथ चाहिए कि हम कल्प पहले वाले वही बाबा के बच्चे हैं जो कल्प पहले भी विजयी बने हैं, जिसका यादगार वैजयन्ती माला है। हम वही कल्प पहले वाले बाबा के बच्चे हैं, जिन्होंने नई दुनिया बनाके, नई दुनिया में राज्य किया है। हम वही लक्की बच्चे हैं। तो पहले चाहिए स्वयं का स्वयं पर फेथ और साथ में चाहिए बाबा के महावाक्यों पर फेथ, सो बाबा पर फेथ। क्या बाबा जानते नहीं हैं कि मेरे बच्चे कहाँ तक सम्पन्न बने हैं! फिर भी बाबा ने हमें तीव्र पुरुषार्थ कराने लिये समय दिया है, जैसे युनिवर्सिटी में भी टाइम होता कि यह कोर्स इतने समय मे पूरा करना है फिर पेपर होगा। तो हमें भी बाबा ने सम्पन्न बनने के लिये 6 मास दिया है। और फिर समय अनुसार बाबा हमसे पेपर भी लेंगे और हमें उस पेपर में प्रैक्टिकल में अटेन्शन रखके पास होना है। तो अमृतवेले रोज़ सवेरे-सवेरे क्या-क्या अटेन्शन रखो! पहले तो अमृतवेले जब उठते हैं तो अपनी सम्पन्नता की स्टेज को याद करो। तो कोई पूछते हैं पहले सम्पन्नता होती क्या है? परन्तु हमारे सामने सम्पन्नता की स्टेज है - ब्रह्मा बाबा। साकार में भी ब्रह्मा बाबा सम्पूर्ण बन प्रैक्टिकल में फरिश्ता स्थिति का हम सबको अनुभव कराते रहे और अभी उसी सम्पन्न फरिश्ता रूप से अव्यक्त वतन में भी हम बच्चों से रूहरिहान करते अथवा बाप-दादा मिलकर इस साकार दुनिया में आते। तो सम्पन्नता का एक्जाम्पुल साकार है, साकार सो आकार बाबा, निराकार बाबा। तो वह हमारा सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सतगुरू है, परन्तु साकार में हमारे सामने फरिश्ता स्थिति का सैम्पुल अथवा सम्पन्नता का स्वरूप है - अव्यक्त ब्रह्माबाबा। जिसने साकार में ऐसी स्थिति बनाई जो आज अव्यक्त रूप में हम सबसे मिलन मनाते। तो हम सबको भी ऐसे फॉलो फादर करना है। अच्छा - ओम् शान्ति।